दादी प्रकाशमणि,
पूर्व मुख्य प्रशासिका

परमात्मा के साकार माध्यम पिताश्री ब्रह्मा

हाथ पकड़ते, बाबा ऐसी अलौकिक दृष्टि देते रहे कि मेरे में कोई लाइट और करेंट आ रही थी। मैं बाबा को देख रही थी, बाबा मुझे लाइट ही लाइट और एक फरिश्ता दिखायी पड़ रहे थे। उस दृष्टि द्वारा जो बाबा ने हाथ में हाथ दिया था उसमें बाबा ने अपनी सब शक्तियाँ और उत्तरदायित्व हमें दे दिया जो आज तक कार्य कर रही है...

18 जनवरी का अविस्मरणीय अनुभव

मीठे बाबा हमें सदैव बेहद सेवाओं में कभी कहाँ, कभी कहाँ भेजते ही रहे। अनेक सेन्टर खोलने के निमित्त बनाया। कभी दिल्ली, तो कभी मुम्बई, कभी कोलकाता, तो कभी बिहार भेजते थे। विदेश में जापान आदि की भी अचानक यात्रा करायी।

बाबा ने एवररेडी बनाया

सदैव बाबा का यह वरदान था कि बच्ची, हर समय एवररेडी रहना। बाबा का एक इशारा आता था कि तुम्हें यहाँ से वहाँ जाना है। मैं कहती थी, जी बाबा। बाबा रोज़ बेहद सेवा की कुछ न कुछ प्रेरणा भी देते थे और आज्ञा भी करते थे। अठारह जनवरी से पहले मैं गामदेवी,मुम्बई में रहती थी। थोड़े ही दिन पहले मुम्बई से बाबा के पास पार्टी लेकर आयी थी। पार्टी लेकर चली गयी। फिर और एक छोटी पार्टी लेकर दो दिन के बाद मधुबन आयी। उस समय दीदी इलाहाबाद के कुम्भ मेले में गयी थी। चौदह जनवरी मकर संक्रांति पर वहाँ मेला लगता है। उस समय विशेष अर्धकुम्भ मेला था। जब मैं यहाँ आयी तो बाबा ने कहा, बच्ची, तुम अभी आयी हो, दो चार दिन रुक जाना। बाबा कभी भी मुझे दो दिन से ज़्यादा नहीं रहने देते थे। कभी मैं कहती थी, बाबा, मैं चार पाँच दिन रहूंगी, तो बाबा कहते थे, क्यों, कोई सेवा नहीं है क्या? क्यों यहाँ रहना है? नहीं, सेवा पर चले जाओ, बादल भरके जाओ और वहाँ बरसो। जब बाबा ने खुद कहा कि दो चार दिन रह जाओ तो मैंने कहा, जी बाबा। मैं आयी थी 14 जनवरी को और जाना था 16 जनवरी को। बाबा ने कहा, बच्ची, पार्टी को जाने दो, दीदी भी नहीं है, थोड़े दिन रह जाओ। उस समय मधुबन का सारा कारोबार दीदी ही सम्भालती थी। बाबा हर बात में हम बच्चों को अनुभवी बनाते थे।

अठारह जनवरी का वो दिन

अठारह जनवरी की सुबह बाबा ने मुरली नहीं चलायी। सवेरे ही बाबा का स्वास्थ्य ठीक नहीं था। यज्ञ के इतिहास में बाबा ने तपस्वी जीवन में केवल यह एक ही दिन था जब बाबा ने प्रातः की मुरली नहीं चलायी थी। परन्तु वे उस दिन सर्वोच्च स्थिति में स्थित थे। जब हमने डॉक्टर को बुलाने के लिए कहा तो बाबा ने उसी मस्ती में कहा था कि बच्ची, डॉक्टर क्या करेगा, मैं तो सुप्रीम सर्जन से बातें कर रहा हूँ। उस दिन बाबा ने कहा, लाओ, आज बच्चों को पत्र लिखूँ। बाबा के हाथ में थी वह लाल कलम, जिसके सुंदर अक्षर सभी के दिलों को खींच लेते हैं। बाबा ने सभी पत्रों के उत्तर दिये। बाबा ने लिखा था, बच्चे, सदा एक मत होकर चलना है, एक की याद में रहना है और सदा शक्तियों को आगे रखना है, तब ही सेवा में सफलता होगी। ये अंतिम पत्र कई बच्चों ने अपने दिल में छुपा कर रख लिये थे। कितनी सौभाग्यशाली थीं वे आत्माएं जिन्हें स्वयं सृष्टि रचयिता ब्रह्मा ने अपने हस्तों से पत्र लिखे थे। दिन में बाबा अंगुली पकड़कर मुझे मधुबन का आंगन घुमाते रहे। उस समय यह ट्रेनिंग सेंटर बन रहा था। बाबा हमें अंगुली पकड़कर दिखा रहे थे। दिन का भोजन कर बाबा ने विश्राम भी किया। शाम के समय कोई पार्टी आयी थी, बाबा उनसे भी मिले। फिर उस दिन बाबा ने कहा, आज रात का भोजन थोड़ा जल्दी कर देते हैं। उस दिन बाबा ने रात 7:30 पर भोजन किया। वैसे तो रोज़ 8:30 बजे भोजन करते थे। भोजन के बाद बाबा रात्रि क्लास में भी आये। क्लास में बाबा ने शिक्षाओं भरी मधुर मुरली सुनायी।

अच्छा बच्चे विदाई

उस दिन बाबा आठ बजे ही क्लास में आये और साकार रूप के वे अंतिम महावाक्य तो दिल में समाने जैसे हैं। बाबा ने कहा था - बच्चे, सिमर सिमर सुख पाओ, कलह क्लेश मिटे सब तन के, जीवनमुक्ति पाओ। बच्चे, निन्दा हमारी जो करे, मित्र हमारा सोई। तुम्हें किसी की भी निन्दा नहीं करनी और किसी से वैर विरोध भी नहीं रखना।

इस प्रकार, याद की यात्रा पर बल देते हुए यज्ञपिता बाबा खड़े होकर गेट की ओर चले और फिर गेट पर रुक गये और बोले, बच्चे, निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी बनो। जैसे बेहद का बाप सम्पूर्ण व सदा निर्विकारी है, सदा निराकार है, निरहंकारी है वैसे ही बच्चों को भी बनना है। फिर उस अंतिम घड़ी के पूर्व बाबा के मुख से ये शब्द निकले, अच्छा बच्चे विदाई। ये शब्द बाबा ने केवल उस रात ही बोले थे, जब बाबा साकार तन से बच्चों से सदा के लिए विदाई लेने जा रहे थे। नहीं तो बाबा सदा बच्चों को गुडनाईट ही कहा करते थे। मेरा अटेंशन गया। पर बाबा ऐसा कहकर बहुत साइलेंस में सीधे अपने कमरे में गये। बाबा बहुत साइलेंस में थे, किसी से कुछ बोले ही नहीं। सदैव बाबा मुरली के बाद गद्दी पर बैठते थे, लेकिन उस दिन बाबा सीधे जाकर पलंग पर बैठ गये।

हाथ में हाथ देकर सारी शक्तियाँ कर दी विल

अधिकतर मैं रात के समय कभी बाबा के कमरे में नहीं जाती थी। उस दिन मालूम नहीं मुझे ख्याल आया कि बाबा से गुडनाईट करूँ। मैं बाबा के कमरे में गयी। देखा तो बाबा पलंग पर बैठा है। मुझे देखकर बाबा ने कहा, आओ बेटी, आओ। मैं संकोच कर रही थी कि अंदर जाऊं या न जाऊँ क्योंकि बाबा पलंग पर थे तो शायद जल्दी सोना चाहते होंगे। बाबा ने मुझे फिर बुलाया। जब बाबा ने दुबारा बुलाया तो मैंने देखा कि बाबा बहुत साइलेंस में हैं कुछ बोले नहीं। मैं भी बाबा को देखती रही, कुछ बोली नहीं। ऐसे करते थोड़ी देर बाबा पलंग पर बैठे फिर टर्न करके पलंग से पैर नीचे करके सामने बैठे। मैं सामने खड़ी थी। उसी घड़ी बाबा ने मेरे हाथ में अपना हाथ दिया। बाबा बैठा था, मैं खड़ी थी। हाथ पकड़ते, बाबा ऐसी अलौकिक दृष्टि देते रहे कि मेरे में कोई लाइट और करेंट आ रही थी। मैं बाबा को देख रही थी, बाबा मुझे लाइट ही लाइट और एक फरिश्ता दिखायी पड़ रहे थे। उस दृष्टि द्वारा जो बाबा ने हाथ में हाथ दिया था उसमें बाबा ने अपनी सब शक्तियाँ और उत्तरदायित्व हमें दे दिया जिसको अव्यक्त बाबा ने कहा कि सारी पावर्स विल कर दी थी। उस समय मुझे पता नहीं पड़ा। दृष्टि देते देते, कुछ घड़ियों में नयन बदलने लगे और मेरा हाथ पकड़ा हुआ हल्का होने लगा। हाथ पकड़ा हुआ था, परन्तु ढ़ीला हुआ था। एक सेकण्ड में इतनी साइलेंस हुई कि एकदम डेड साइलेंस हो गयी। मैं समझ नहीं पायी कि क्या हो गया, मुझे लग रहा था कि मैं लाइट के साथ वतन में जा रही हूँ। मैं कहने लगी, बाबा, बाबा। बाबा बोल नहीं रहे थे। मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि क्या हो गया। बाद में पता पड़ा कि बाबा अव्यक्त हो गये। मुझे ऐसा अनुभव होने लगा कि ऑलमाइटी बाबा मेरे सामने खड़ा है और साकार बाबा हमसे छिप गया है। हमने बाबा को लिटा दिया। इतने में डॉक्टर आ गया और उसने चेक करके कहा कि बाबा अब नहीं रहे.... परन्तु मुझे ये आभास नहीं हुआ था कि बाबा चला गया है। मैं यही कह रही थी कि बाबा है....सबका प्यारा बाबा है....बाबा सदा साथ रहेगा....। बाबा ने मुझमें अथाह शक्ति भर दी थी। मैं सब जगह फोन कर रही थी। मैं कहती थी ड्रामा की भावी, ड्रामा याद है, बाबा अव्यक्त हो गये। जो भी आना चाहे भले आये। कोई भी आँसू न बहाये, बाबा तो अभी भी हमारे साथ हैं।

छत्तरपुर-म.प्र.। विश्व दिव्यांग दिवस पर आयोजित 'दिव्यांग समानता, संरक्षण एवं सशक्तिकरण' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए सामाजिक न्याय विभाग में पदस्थ प्रमुख कलाकार बी.के. पटैरिया, आई.ए. खान, सी.डब्ल्यू.एस.एन. दिव्यांत छात्रावास से सुजीत यादव, प्रगतिशील छात्रावास से अनीता, पटवारी रचना राठौर, ब्र.कु. रमा, ब्र.कु. कल्पना तथा ओमप्रकाश अग्रवाल।

नई दिल्ली। योग कॉन्फिडरेशन ऑफ इंडिया तथा इंडो यूरोपियन चेम्बर ऑफ स्मॉल एंड मीडियम इन्टरप्राइज़ेज़ द्वारा आयोजित '11वें नेशनल वुमेन एक्सीलेंस अवॉर्ड-2018' में ब्रह्माकुमारी बहनों तथा अन्य क्षेत्रों की विशिष्ट महिलाओं को सम्मानित किया गया।

ठाणे-महा.। सेवाकेन्द्र द्वारा सावरकर नगर में विश्व यादगार दिवस पर कार्यक्रम के पश्चात् ब्र.कु. सरला को शॉल पहनाकर सम्मानित करते हुए विद्या कोवारकर,महिला शाखा संघटक।